VIDEO Play AUDIO

भजन

तर्ज– आ लौट के आ जा मेरे मीत

करो मूलमिलावे का ध्यान,जहां परआत्म बैठी है
जहाँ बैठे हैं श्री श्यामाश्याम,जहाँ परआत्म बैठी है

1– चौंसठ थंभ जहां चार द्वार हैं,थंभों से उठत जो नूर
नूर नूर सो जंग करे है,जानो शीतल उग्यो कोटि सूर
ए खिलवत है नूर भरी,जहां परआत्म...
2–तले गिलम है ऊपर है चंद्रवा,तकियों की शोभा है न्यारी
तकियों के साथ भराये के बैठी,बैठक इन्हों की बड़ी प्यारी
बैठी रूहें जहाँ बारह हजार,जहां परआत्म...
3–पछिम में सिहांसन राजश्यामाजी को,चारों चरण अति प्यारे
एक चरण है नूर की चौकी पे,दूजा बांई जांघ धरे
अब चरणों में करूं प्रणाम,जहां परआत्म...
4– दहशत है दिल में हो न जुदाई,बैठी गले डाल बईयां
अंक सो अंक भराये के बैठीं,बैठीं ज्यों दाड़िम की कलियां
अपनी बैठक करो अब याद,जहां परआत्म...
5– हृदय में चढ़ चढ़ आवे पिया जी,बैठक जो मूल मिलावे
इश्क हमारा हमको लौटा दो,करूं मीठी मैं तुमसों बातें
सुख खिलवत के आवें याद,जहां परआत्म...